संगीत में रस का महत्त्व

डॉ. सरयू शर्मा
प्राध्यापिका, (हिन्दी–विभाग)
सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी।

रस वह गुणवत्ता है जो कलाकार और दसकार के बीच समझ उत्पन्न करती है। शब्दिक स्तर पर रस को मतलब वह है जो चखा जा सके या जिसका आनंद लिया जा सके। नाट्य शास्त्र के छठे पाठ में, लेखक भरत ने संस्कृत में लिखा है, ''विभावानूभावा व्यभिचारी संयोगाद निष्पत्ति'' अर्थात् विभाव , अनुभाव और व्याभिचारी के मिलन से रस का जन्म होता है। जिस प्रकार लोग स्वादिष्ट खाना, जो कि मसाले , चावल और अन्य चीजों का बना हो, जिस रस का अनुभव करते है और खुश होते है उसी प्रकार स्थायी भाव और अन्य भावों का अनुभाव करके वे लोग हर्ष और संतोष से भर जाते है।

इस भाव को तब 'नाट्यरस' कहा जाता है। कुछ लोगों के अनुसार रस और भाव की उच्चता उनके मिलन के साथ होती है लेकिन यह बात सत्य नहीं हैं, क्योंकि रसों का जन्म भावों से होता है परन्तु भावों का जन्म रसों से नहीं होता है। इसी कारण के लिये भावों को रसों का मूल माना जाता है। जिस प्रकार मसाले, सब्जी ओर गुड के साथ स्वाद या रस बनाया जा सके उसी प्रकार स्थायी भाव और अन्या भावों से रस बनाया जा सकता है। और ऐसा काई स्थाई भाव नहीं है जो रस की वृद्धि नहीं करता और इसी प्रकार स्थायी भाव, विभाव अनुभाव और व्याभिचारी भावों से रस की वृद्धि होती है।

भाव

भाव दर्शक को अर्थ देता है उसे भाव इसलिए कहते हैं क्योंकि यह कविता का विषय, शारीरिक क्रिया और मानसिक भावनाओं दर्शकों तक पहुँचाता है।

भाव 'भविता' 'वसिता' और 'प्रक्रिया' जैसे शब्दों से निर्मित हैं। जिसका अर्थ है होना।

विभाव या निर्धारक तत्व

विभाव कारण या प्रेरणा होता है। उसे इसलिए विभाव कहते हैं क्योंकि यह वचन शरीर, इशारों और मानसिक भावनाओं का विवरण करते हैं।

विभाव दो प्रकार का होता है–

1. आंलबन विभाव

2. उद्धीपन विभाव

1. आंलबन विभाव

यह भाव की निर्माण का मुख्य कारण होता है। जब भाव एक आदमी या वस्तु या कर्म की वजह से आकार लेता है उसे आलम्बन विभाव कहते है। उदाहरण : जब प्रिय मित्र को देखने के बाद आनन्द मिलता है।

2. उद्धीपन विभाव

जब किसी वस्तु भावना को उत्तेजित करता है जैसे– गुण, कारवाई, सजावट, वातावरण आदि।

3. अनुभाव

जिसका उद्‌भव वाक्य और अंगाभिनय से होता है उसे अनुभव कहते हैं। यह विभाव का परिणामी है। यह एक व्यक्ति द्वारा महसूस अभिव्यक्ति भावनात्मक भावनाएं है।

<u>स्थायी भाव –</u> स्थायी भाव से रस का जन्म होता है। जो भावना स्थिर और सार्वभौम होती है उसे स्थायी भाव कहते है। रस का उत्पादन भाव के बिना नहीं हो सकता, इस प्रकार से स्थायी भाव रस के नाम से मशहूर है।

स्थायी भाव व होते है :–

1. रति (प्रेम)
2. उत्साह (ऊर्जा)
3. शोक
4. हास
5. विस्मय
6. भय
7. जुगुप्सा
8. क्रोध
9. निर्वेद

संचारी भाव

रस की वस्तु या विचार को नेतृत्व करते है उसे संचारी भाव कहते है। संचारी भावों की संख्या 33 होती है।

सात्विक भाव

आश्रय की शरीर से उसके बिना किसी बाहरी प्रयत्न के स्वतः उत्पन्न होने वाली चेष्टाएं सात्विक, अनुभाव कहलाती है।

सात्विक भाव 8 तरह के होते है। स्तम्भ, स्वेद, स्वरभंग, वेपथु (कम्पन), वैवर्ण्य, अश्रुपात, रोमांस व प्रलय।

रस सिद्धान्त का संगीत में महत्त्व

भरतमुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' विश्व में पहला ग्रंथ है जिसमें कला से सम्बन्धित चर्चा विस्तार से की गई है। भारत में कलाओं का श्रेष्ठ माध्यम नाट्य अथवा नाटक को माना गया है।

कलाओं का आस्वादन करने के लिऐ भी संस्कार जनिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। प्रकृति की अनन्त गहराइयों में छिपी सौन्दर्य संपदा को कोई दिव्य चक्षु धारक ही दर्शन कर उससे जनित आनंद से सराबोर हो सकता है। वास्तव में प्रकृति ही मानव सभ्यता के विकास में कलात्मक सुरूभि पैदा करने वाली पहली गुरू है। मानव ने सबसे पहले प्रकृति से ही सृजन करना सीखा। चाहे वो रंगों का इन्द्र धनुष हो या नाद गूँज। उसने विभिन्न माध्यमों का सहारा लेकर प्रकृति जन्य उपादानों में अपरिमित भाव भगिमायों द्वारा कला निर्माण से उद्धृत भावों को एक अद्भुत गीत में डाल कर उससे जनित आनंद का रसास्वादन करना सीखा। आनन्द भी ऐसा जो आत्मा को परमात्मा में लीन करवा दे।

कला और उससे जनित आनंद का सीधा संबध भाव है। भरत मुनि ने अपनी इस संबंधी व्याख्या में इस बात को स्पष्ट किया है कि कला के माध्यम से ही भाव पैदा होते हैं और रस की उत्पत्ति होती है। भावों और अभिनय से सम्बद्ध स्थायी भावों का विद्वान लोग, मानसिक आस्वादन कर लेते है। ये आस्वादन कला के सौष्ठव से अभिभूत मन की चरम अवस्था का भी द्योतक है। जिस भाव के आत्मिक समायोजन से मन को आनन्दातिरेक की पराकाष्ठा का आभास होता है उसे आत्मसात करने का अभ्यास भी ज्ञान के वैभव का ही परिणाम है। भारतीय दर्शन में कलाओं द्वारा मानवीय संवेदनाओं और उनके भावों को सम्प्रेषित कर रस में परिवर्तित कर आनंद से परिपूर्ण सामाजिकों के प्रत्येक अनुभवों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

भरत द्वारा बताए गये रस निष्पत्ति के लिये भावों को भाबित करने हेतू विभाव, अनुभाव एंव व्याभिचारी को प्रमुख तत्व माना है। दूसरे शब्दों में रस वह है जो स्थायी भावों को विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के द्वारा सहृदय के मन में अभिव्यक्त करता है। वास्तव में जिसे हम रस कहते हैं वह एक आनंदात्मक अनुभव है जो स्थायी भावों की एक विलक्षण अनुभूति है।

मग्मट के रसोत्पत्ति मत का प्रतिपादन भट्टलोल्लट ने किया है। अलंकारवादी आचार्य दण्डी ने भी भट्टलोल्लट व मम्मट का समर्थन किया है। दण्डी का रस सूत्र भी भरतमुनि के समान है– ''विभावातुभावव्याभिजारिसंयोगाद्सनिष्पति'' अर्थात् विभाव आलम्बन इत्यादि का जो संयोग है उससे रस की चित्रवृत्ति रूप इत्यादि स्थायी भावों की निष्पत्ति उत्पन्न हुआ करती है। अभिनव गुप्त द्वारा 'अभिव्यक्तिवाद' को प्रचारित किया गया और आज भी उन्हीं के मत को स्वीकारा जा रहा है। वर्तमान समय में इस बात की आवश्यकता है कि सौंदर्यशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न मान्यताओं पर बृहद चर्चा की जाये और भारतीय दृष्टिकोण को विश्व स्तर पर समझाया जाये। क्योंकि भारतीय दर्शन को समझने और आत्मसात करने के लिए इसे समझना आवश्यक है।

रसात्मक अभिव्यक्ति भी संभावनाओं और उनके मानव मात्र पन होने वाले शाश्वत प्रभाव पर विद्वानों, शास्त्रकारों, कलाकारों के बीच पुनः चर्चा हो जिससे इस अत्यंत जटिल पर हार्दिक विषय का एक निश्चित मार्ग प्रशस्त हो सके।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. संगीत प्रवाह चिरंतन, सं. संतोष पाठक।
2. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य–सिद्धान्त, लोक–भारती प्रकाशन।
3. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, रस सिद्धान्त का पुनर्विवेचन, दिल्ली।